ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 11 मई 2025

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 11 मई 2025 से 17 मई 2025

वैशाख शु. 14 ● वि० सं०-2081 ● वर्ष 66, अंक 19, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 201 ● सृष्टि-संवत् 1,97,29,49,125 ● पृ.सं. 1-12 ● मूल्य - 5/- रू. ● वार्षिक शु. 300/- रू.

हिमाचल प्रदेश में सुजानपुर टीहरा (हमीरपुर) में महात्मा हंसराज जी की 161वीं जयन्ती पर भव्य समारोह समपन्न

"यह कहना अत्यन्त कठिन है कि महात्मा हंसराज का तप ज़्यादा था या त्याग। लेकिन यह दोनों भाव डी.ए.वी. के लिए आधार भूमि बन के उभरे हैं। आने वाले समय में इस आधार को और अधिक पुष्ट करना होगा।" यह शब्द आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. के यशस्वी प्रधान आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी जी ने कहे। डॉ. सूरी हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर जिला में स्थित ऐतिहासिक स्थान सुजानपुर टीहरा के विशाल मैदान में आयोजित महात्मा हंसराज की 161वीं जयन्ती पर देश भर से आए डी.ए.वी. प्राचार्यों, अध्यापिकाओं की लगभग 10,000 की उपस्थिति को संबोधित कर रहे थे।

हिमाचल की सुरम्य घाटी में आयोजित यह पर्व दर्शकों के दिलों में अभिट छाप छोड़ गया।

कार्यक्रम का आरम्भ भव्य रूप से सजाई यज्ञशाला में सम्पन्न यज्ञ से हुआ। यज्ञ के मुख्य यजमान के रूप में आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी ने अपनी धर्म पत्नी श्रीमती मणि सूरी के साथ यज्ञ में पवित्र आहुतियाँ प्रदान कीं। यज्ञ वेदी पर अन्य यजमानों के रूप में न्यायमूर्ति श्री प्रीतमपाल जी सपत्नीक, श्री प्रबोध महाजन जी, डॉ. डी. एस. राणा जी, श्री अनिल राव जी, श्री अजय गोस्वामी जी, श्री अरविन्द घई जी, ब्रिगेडियर ए.के. अदलखा, श्रीमती जुनेश काकरिया तथा श्री जे.पी. शूर, विशेष रूप से उपस्थित रहे।

"नाथ तू ही एक सारे विश्व का आधार है" मधुर स्वर में श्री नरेश द्वारा प्रस्तुत इस भजन से यज्ञ का आरम्भ हुआ। देश भर से आये 20 संन्यासी और आर्य विद्वान इस यज्ञ पर मुख्य यजमान को अपना आध्यात्मिक आशीर्वाद देने के लिए उपस्थित थे। डॉ. प्रमोद के ब्रह्मत्व में सम्पन्न इस यज्ञ में डी.ए.वी. बरमाणा से हिमाचल के पारम्परिक वेष में आये छात्र–छात्रायें तत्लीन होकर मंत्रपाठ कर रहे थे। अपने स्वभावानुसार मुख्य यजमान डॉ. सूरी ने यज्ञोपरान्त पहले यज्ञशाला में उपस्थित यजमानों और आर्यजनों पर पुष्पवृष्टि कर आशीर्वाद दिया। इससे पूर्व उन्होंने उपस्थित संन्यासियों और विद्वानों के चरणों में पुष्प अर्पित कर आशीर्वाद ग्रहण किया।

इसके बाद संन्यासियों और विद्वानों ने आगे बढ़कर पुष्पवृष्टि से प्रधान जी को आध्यात्मिक आशीर्वाद दिया।

मुख्य कार्यक्रम विशेष रूप से निर्मित तियंजिले भव्य मंच पर आरम्भ हुआ।

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

जो सब जगत् के पदार्थों को संयुक्त करता और सब विद्वानों का पूज्य है और ब्रह्मा से लेके सब ऋषि मुनियों का पूज्य था, है और होगा, इससे उस परमात्मा का नाम **'यज्ञ'** है। क्योंकि वह सर्वत्र व्यापक है। स. प्र. समु. १

{संपादक - पूनम सूरी}

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 11 मई 2025 से 17 मई 2025

यज्ञ रचा, दान कर

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

न त्वां शतं चन ह्रुतो, राधो दित्सन्तमामिनन्।
यत् पुनानो मखस्यसे।।

ऋग् ९.६१.२७

ऋषिः **अमहीयुः आङ्गिरसः।** देवता **पवमानः सोमः।** छन्दः **गायत्री।**

● (हे आत्मन्!), (**राधः**) धन को, (**दित्सन्तं**) दान करना चाहते हुए, (**त्वा**) तुझे, (**शतं चन**) सौ भी, (**ह्रुतः**) कुटिल वृत्तियाँ व कुटिल जन, (**अ आमिनन्**) हिंसित अर्थात् मार्ग–च्युत न कर पायें, (**यत्**) जब, (**पुनानः**) (स्वयं को) पवित्र करता हुआ। (तू), (**मखस्यसे**) यज्ञ रचाता है।

● हे पवमान सोम! हे स्वयं को तथा मन, बुद्धि आदि को पवित्र करने वाले सात्विक–वृत्ति जीवात्मन्! जब तू परोपकार का यज्ञ रचाता है और अपना धन किन्हीं सत्पात्र व्यक्तियों को या संस्थाओं को दान देने का संकल्प करता है, तब बहुत–सी कुटिल स्वार्थ–वृत्तियाँ और बहुत–से कुटिल मनुष्य तेरे उस दान–व्रत की हिंसा करना चाहते हैं और तुझे दान के मार्ग से विचलित करने का प्रयत्न करते हैं। स्वार्थ–वृत्ति कहती है कि सहस्त्र, दश सहस्त्र, पचास सहस्त्र, लाख, दो लाख रूपया तुम अन्यों को दान कर कर रहें हो, तो क्या स्वयं भूखे मरना चाहते हो? देखो, सब अपनी सम्पति बढ़ा रहे हैं; जो सहस्त्रपति है वह लक्षपति बन रहा है, जो लक्षपति है वह करोड़पति बन रहा है। उनके पास कई–कई कोठियाँ हैं, मोटरकारें हैं, सेवक हैं। क्या दान का ठेका तुमने ही लिया है? क्या तुम्हारे ही भाग्य में यह लिखा है कि स्वयं तो मोटा–झोटा पहनो, रूखा–सूखा खाओ, झोपड़ी जैसे मकानों में रहो और दूसरों पर धन लुटाओ। पहले अपनी और अपने कुटुम्ब की स्थिति सुधारो, फिर अन्यों की सुध लेना। हे आत्मन्! तू उस स्वार्थ–वाणी को मत सुन। तुझे दान करने के लिए उद्यत देख कई स्वार्थी परिचित मनुष्य भी आकर मिथ्या ही आलोचना करते हैं कि तुम जिस संस्था को दान करने जा रहे हो, उसकी आन्तरिक अवस्था को भी जानते हो? उनमें सब खाऊ–पिऊ बैठे हैं, तुम्हारा दिया हुआ दान उन्हीं के पेट में जाएगा। हे आत्मन्! तू उन उन स्वार्थी जनों के भी कुटिल परामर्श पर ध्यान मत दे। सौ प्रकार की स्वार्थ–भावनाएँ और सौ स्वार्थी–जन भी तुझे तेरे दान के संकल्प से विचलित न कर सकें।

हे मेरे आत्मन्! वेद–शास्त्रों की वाणी सुन, जो तुझे दान के लिए प्रेरित कर रही है। तू अपनी कमाई में से प्रतिदिन या प्रतिमास कुछ निश्चित प्रतिशत दान–खाते में डाल और उसे लोक–कल्याण में व्यय कर। दान से दक्षिणा पानेवाले का तो हित होता ही है, उससे भी अधिक हित और मंगल दाता का होता है, यह वैदिक संस्कृति की भावना है। इसके विपरीत, "अकेला भोग करनेवाला मनुष्य पाप का ही भोग करता है"।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

तत्त्वज्ञान

● महात्मा आनन्द स्वामी

सृष्टि की उत्पत्ति, इसके पूर्व जगत् की अवस्था की विशद चर्चा के पश्चात् स्वामी जी ने वेद के अतिरिक्त दर्शनों और अन्य शास्त्रों में उल्लिखित सृष्टि क्रम का वर्णन किया और कहा कि सृष्टि के चौबीस (24) तत्त्व आत्मा, मन, इन्द्रियों और अर्थ के उत्तरोत्तर संयोग से कार्य करते है।

आत्मा के विषय में पश्चिमी विद्वानों का मत प्रस्तुत करते हुए कहा कि वे भी कहते हैं कि आत्मा अवश्य है। इस विषय में प्रो. डब्ल्यू. बी. बॉटमली का उद्धरण देकर इसकी पुष्टि की। प्रत्येक वस्तु की विज्ञान से व्याख्या नहीं की जा सकती। भूगर्भ विद्या भी इस बात मानती है। प्रो. सिलवानस थॉम्पसन तो ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों की अनादि सत्ता स्वीकार करते हैं। सर आलिवर लॉज ने भी ऐसी बात कही है।

स्वामी जी ने बताया कि हमारे पूर्वजों ने यह तथ्य करोड़ों वर्ष पहले जान लिया था। इस विषय में गौतम और कणाद का उदाहरण प्रस्तुत किया।

स्वामी जी ने प्रश्न उठाया–यह सारा संसार क्या है ? हमारा जन्म कैसे और क्यों हो गया ? सुख, दुःख और मृत्यु ये सब क्या हैं ?

संसार में दुःख क्यों है ? अब विषय को इस ओर मोड़ा, दुःखों को देखकर क्यों लोग खाने पीने और मौज मनाने की प्रवृत हुए हैं।

तीन प्रकार के मनुष्यों पर विशद चर्चा करके संसारी जीवों की वेदना पर चर्चा की।

...अब आगे

भगवान् राम की व्यथा की कथा

इस संसार के भिन्न–भिन्न पदार्थों का अवलोकन करके भगवान् राम जितने दुःखित हुए, इतना और कौन होगा ? 'योगवासिष्ठ' में यह मार्मिक वर्णन लगभग 150 पृष्ठों में भगवान् राम की वाणी से कराया गया है। इस व्यथा की कथा लिखने का प्रयोजन यह है कि जब तक संसारी भोग–पदार्थों से वैराग्य नहीं होता, तत्त्वज्ञान को समझने की बुद्धि तब तक प्रकाशित नहीं होती। दर्पण से जब कूड़ा तथा मैल हटे, तभी तो मुखड़ा दिखाई दे सकेगा !

भगवान् राम की वाणी से जो कुछ कहलवाया गया है, उसे पढ़कर हर प्रकार के हृदय पर एक गम्भीर चोट लगती है और यह लगनी ही चाहिए क्योंकि मानव को सार–वस्तु तभी मिल सकती है जब ऊपर की असार वस्तुओं को परे हटा दिया जाए। अब भगवान् राम की व्यथा की कथा सुनिए :

भगवान् राम अभी छोटी ही आयु के थे। तीर्थ–यात्रा में उन्होंने संसार की जो अवस्था देखी, उससे वे अत्यन्त खिन्न रहने लगे। उन्हें कोई भी वस्तु अच्छी न लगती। न हँसते, न रोते, न गाते, एकान्त में मौन साधे बैठे रहते। शरद् ऋतु की समाप्ति में वृक्ष की जैसी अवस्था होती है, वैसे ही श्री राम प्रतिदिन दुबले–पतले और पीले होते जाते। श्री वाल्मीकि जी लिखते हैं:

किं धनेन किमम्बाभिः किं राज्येन किमीहया ?
इति निश्चयवानन्तः प्राणत्यागपरः स्थितः।।
46।।

योगवासिष्ठ, वैराग्य प्रकरण, सर्ग 10।।

'धन से क्या होगा ? माताओं से क्या होगा ? इस विस्तृत राज्य से कौन प्रयोजन सिद्ध होगा ? किसी झूठी वस्तु की इच्छा से क्या ? इस प्रकार का निश्चय करके प्राण त्याग करने की इच्छा करने लगे।'

इन्हीं दिनों में विश्वामित्र जी महाराज दशरथ के पास पहुँचे कि उनके यज्ञ की रक्षा के लिए श्री राम को उनके साथ भेजा जाए। भगवान् राम तो उदास – हताश थे, फिर भी उन्हें बुलाया गया। गुरु वसिष्ठ जी महाराज भी वहीं विद्यमान थे। श्री राम ने दरबार में पहुँचकर अपनी मानसिक अवस्था बतलाते हुए संसार में एक–एक वस्तु से उपरामता प्रकट की और कहा :

अहं तावदयं जातो निजेऽस्मिन् पितृसंचनि।
क्रमेण वृद्धिं संप्राप्तः प्राप्त विद्यश्च संस्थितः।।
3।।

ततः सदाचारपरो भूत्वाऽहं मुनिनायक !
विह्रतस्तीर्थयात्रार्थमुर्वीमम्बुधिमेखलाम्।।
4।।

योगवा. सर्ग 12।।

'मैं यहाँ अपने पिता के घर में उत्पन्न हुआ, क्रम से बढ़ा और मैंने विद्या भी प्राप्त की। उसके पश्चात् मुनिनायक ! सदाचरणों के अनुष्ठान में

सम्मानित संन्यासी

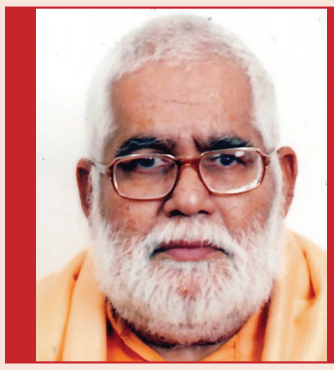
स्वामी प्रणवानन्द जी

स्वामी प्रणवानन्द जी

स्वामी मेधानन्द जी

स्वामी सूर्यदेव जी

स्वामी सुरेशानन्द जी

आचार्य नरेश जी

ब्रह्मचारी मनुदेव नैष्ठिक जी

आचार्य विवेक चैतन्य जी

आचार्य गदाधर नैष्ठिक जी

वानप्रस्थ पुरुषोत्तम मुनि जी

☞ पृष्ठ 01 का शेष

हिमाचल प्रदेश में सुजानपुर टीहरा (हमीरपुर)...

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी ने, श्रद्धेय स्वामी प्रणवानन्द, विशिष्ट अतिथि एवं मंच पर उपस्थित उपप्रधान वृन्द एवं निदेशकों के साथ दीप प्रज्ज्वलन किया। डी.ए.वी. गान के साथ कार्यक्रम आरम्भ हुआ।

सर्वप्रथम मान्य प्रधान जी ने विशेष आशीर्वाद देने के लिए उपस्थित स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी के चरण स्पर्श कर उन्हें अंग वस्त्र, प्रशस्तिपत्र और तुलसी का पौधा देकर सम्मानित किया। इसके साथ विशिष्ट अतिथि डॉ. (प्रो.) राज नेहरू का पुष्प देकर स्वागत किया।

इसके पश्चात् प्रधान जी मंच पर दाहिनी ओर आसीन संन्यासियों की ओर बढ़े और एक–एक करके सबका आशीर्वाद ग्रहण करते हुए अंगवस्त्र, प्रशस्तिपत्र और पौधा और सम्मान राशि देकर अभिनन्दन किया। मंच के बाई ओर विराजमान आर्य विद्वानों का सम्मान मंचस्थ उपप्रधान वृन्द ने किया।

इस वर्ष **दस संन्यासियों–स्वामी प्रणवानन्द जी,** गुरुकुल गौतम नगर, (दिल्ली), **स्वामी प्रद्युम्न जी**, चखराना (राजस्थान), **स्वामी मेधानन्द जी**, पातंजल योगधाम (हरिद्वार), **स्वामी सूर्यदेव जी,** ओङ्कारेश्वर (मध्य प्रदेश), **स्वामी सुरेशानन्द जी**, बहरोड़ (राजस्थान), **आचार्य नरेश जी,** उद्गीथ साधना स्थली, राजगढ़ (हि. प्र.), **ब्रह्मचारी मनुदेव नैष्ठिक जी**, आदिम गुरुकुल, कोरापुट (उड़ीसा), **आचार्य विवेक चैतन्य जी,** संस्कार विद्या गुरुकुलम्, देवस्थली (हि.प्र.), **आचार्य गदाधर नैष्ठिक जी**, मुरली जोर (उड़ीसा), **वानप्रस्थ पुरुषोत्तम मुनि जी**, गंजाम (उड़ीसा) और **दस विद्वानों – डॉ. सुद्युम्न आचार्य जी,** वेदवाणी वितान, सतना (म.प्र.), **प्रो. (डॉ.) सुधीर कुमार जी**, जे. एन. यू., (दिल्ली), **डॉ. सारस्वत मोहन 'मनीषी' जी**, (दिल्ली), **डॉ. राम प्रकाश 'वर्णी' जी**, गुरुकुल कांगड़ी, (हरिद्वार), **डॉ. धर्मेन्द्र कुमार जी,** (दिल्ली), **डॉ. आरती प्रधान जी,** कन्या गुरुकुल आमसेना (छ.ग.), **आचार्य सत्यसिन्धु आर्य जी**, गुरुकुल नर्मदापुरम (म.प्र.), **आचार्य रवीन्द्र जी**, हमीरपुर (उत्तर प्रदेश), **आचार्य अशोक शास्त्री जी,** नारेडा, (राजस्थान) **ब्रह्मचारी राजेन्द्र आर्य जी**, फरीदाबाद (हरियाणा), को शॉल, प्रशस्तिपत्र एवं भेंट देकर सम्मानित किया गया।

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

सम्मानित विद्वान

डॉ. सुद्युम्न आचार्य जी

प्रो. (डॉ.) सुधीर कुमार जी

डॉ. सारस्वत मोहन 'मनीषी' जी

डॉ. राम प्रकाश 'वर्णी' जी,

डॉ. धर्मेन्द्र कुमार जी

डॉ. आरती प्रधान जी

आचार्य सत्यसिन्धु आर्य जी,

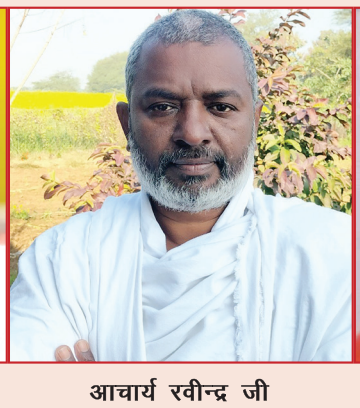
आचार्य रवीन्द्र जी

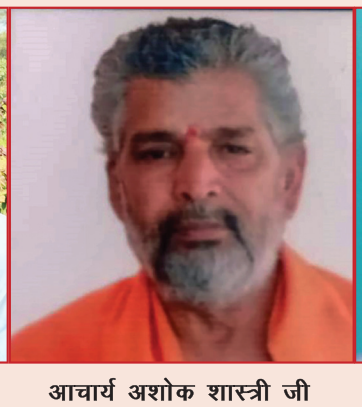
आचार्य अशोक शास्त्री जी

ब्रह्मचारी राजेन्द्र आर्य जी

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2024-25-26
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2024-25-26
Posted at L.P.C.(Delhi RMS)D110006 ON Wednesday & Thursday, 2025

मान्य प्रधान जी उद्‌बोधन देते हुए

☞ पृष्ठ 11 का शेष

हिमाचल प्रदेश में सुजानपुर टीहरा (हमीरपुर)...

महात्मा हंसराज को समर्पित एक समूहगान के पश्चात् मान्य प्रधान जी ने उपस्थिति को अत्यन्त भाव भरे शब्दों में अपना उद्‌बोधन दिया। प्रधान जी ने कहा महात्मा हंसराज जी के तप और त्याग से प्रेरणा लेकर डी.ए.वी. की छवि को पवित्र और समुज्ज्वल बनाने की दिशा में सुदृढ़ प्रयास करने होंगे और **'मनुर्भव'** के वैदिक संदेश को हृदय में बैठाकर डी.ए.वी. को मानव निर्माण की सच्ची प्रयोगशाला बनाना होगा।

मुख्य मंत्री हरियाणा के ओ.एस.डी. प्रो. (डॉ.) राज नेहरू को उनकी प्रशासनिक सेवाओं एवं दो भिन्न–भिन्न विश्वविद्यालयों के उपकुलपति के रूप में उनकी भूमिका के लिए 'विशिष्ट सम्मान' से नवाज़ा गया।

सम्मान की इस परम्परा में शिक्षा तथा सुप्रशासन के लिए डॉ. विक्रमजीत सिह, प्राचार्य, दयानन्द महाविद्यालय हिसार (हरियाणा), श्री एस.के. गुलेरिया, प्रधानाचार्य एवं ए.आर.ओ., डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल मण्डी (हि.प्र.) तथा श्रीमती सीमा मेंहदीरत्ता, प्राचार्या एवं ए.आर.ओ., डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, खारघर (नवी मुंबई) को सम्मानित किया गया।

डी.ए.वी. शैक्षिक उत्कृष्टता केन्द्र द्वारा आयोजित इंग्लिश, गणित, विज्ञान और सूचना प्रौद्योगिकी विषयों के ओलम्पियाड में प्रथम स्थान पाने वाले छः छात्र–छात्राओं को उनकी उपलब्धि के लिए सम्मानित किया गया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मुख्य पत्र ***'आर्यजगत्'*** तथा ***'आर्यन हैरीटेज़'*** के इस अवसर के लिए तैयार किए गए महात्मा हंसराज विशेषाकों का विमोचन आदरणीय आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी जी एवं मंचस्थ विशिष्ट अतिथियों द्वारा किया गया।

इसके बाद मण्डी, हमीरपुर, आलमपुर, सुन्दरनगर, नादौन, पालमपुर, नेरचौक के डी.ए.वी. विद्यालयों के 1000 छात्र–छात्राओं द्वारा महात्मा हंसराज के जीवन पर आधारित संगीतमयी नृत्य नाटिका ***'एक दीपक जो जलता रहा'*** के मंचन ने दर्शकों का दिल जीत लिया। इस नृत्य नाटिका का निर्देशन डी.ए.वी. मण्डी के संगीत शिक्षक विशाल शर्मा द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के दौरान मण्डी, नादौन विद्यालयों के द्वारा अलग–अलग तथा मण्डी, नादौन और आलमपुर के अध्यापकों द्वारा समूहगान के रूप में महात्मा हंसराज जी को संगीतमयी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने अपने आशीर्वाद वचनों में आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी जी के परिवार की आध्यात्मिक परम्परा का स्मरण दिलाया और कहा कि डॉ. सूरी के उद्‌बोधन में महात्मा आनन्द स्वामी जी झलक स्पष्ट नज़र आ रही थी। उन्होंने प्रधान जी ने नेतृत्व में डी.ए.वी. में आए बदलाव की चर्चा की इसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

शान्ति पाठ से आयोजन संपन्न हुआ।

सम्मानित विद्यार्थी मुख्य अतिथि के साथ

'दीपक जलता रहा' नृत्य नाटिका का एक दृश्य

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **फर्स्ट इम्प्रैशन कार्पोरेट सर्विसिज, (प्रा.) लि.,** ई.113–114, सैक्टर–63, नोएडा, उ.प्र.–201301 (दूरभाष : 120–4246315) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**